मेवाड़ का इतिहास

मेवाड़ रियासत

- ⇒ क्या है ⇒ उदयपुर इसके आस-पास का क्षेत्र
- ⇒ इसके अन्तर्गत जिले ⇒ उदयपुर
  - चित्तौड़गढ़
  - राजसमंद
  - भीलवाड़ा
  - सलुम्बर
  - शाहपुरा
- ⇒ प्राचीन नाम ⇒ मेदपाट
  - प्राग्वाट
- ⇒ मेवाड़ रियासत का जनपद था ⇒ शिवि जनपद

गुहिल वंश

- → उत्पत्ति हुई ⇒ अबुल-फजल के अनुसार ईरान शासक नौशेरखाँ आदिल की संतान थी।
- → डा भण्डारकर के अनुसार ⇒ ब्राह्मण जाति के थे
- → कुलदेवता ⇒ एकलिंग जी (मंदिर-उदयपुर)
- → आराध्य देवी ⇒ बाणमाता (मंदिर-उदयपुर)
- → ध्येय वाक्य था ⇒ "जो दृढ़ राखे धर्म को तिहि राखे करतार"

⇒ गुहिल वंशीय शासकों का क्रम ⇒

संस्थापक ⇒ गुहिलादित्य

↓

बप्पा रावल
- → वास्तविक संस्थापक
- → राजधानी ⇒ नागदा
- → उपाधि ⇒ रावल

↓

अल्लट → राजधानी = आहड़

↓

रणसिंह

↓

जैत्रसिंह → राजधानी = चित्तौड़गढ़

↓

तेजसिंह

↓

समरसिंह → 2 पुत्र →
- रतनसिंह
- कुम्भकर्ण → नेपाल चला गया।

↓

रतनसिंह → रानी = पद्मिनी

↓

हम्मीरदेव →
- नया नाम दिया = सिसोदिया वंश
- शाखा = राणा/महाराणा की उपाधि

↓

खेता/क्षेत्रसिंह

↓

राणा लाखा

↓

मोकल

↓ पुत्र

राणा कुम्भा →
- उपाधि → अभिनव भरताचार्य
- स्थापत्यकला का स्वर्णकाल

↓ पुत्र

राणा रायमल → पुत्र →
- पृथ्वीराज
- जयमल
- सांगा

↓

राणा सांगा → उपनाम
- → सैनिकों का भग्नावशेष
- → हिन्दुपति

↓ पुत्र

विक्रमादित्य

↓

राणा उदयसिंह → 3 पुत्र
- → महाराणा प्रताप
- → शक्ति सिंह
- → जगमाल

↓

महाराणा प्रताप → उपनाम
- ⇒ कीका
- ⇒ मेवाड़ केसरी

↓ पुत्र

अमरसिंह I → इसने सर्वप्रथम से मुगलों से संधि की थी

↓ पुत्र

कर्णसिंह → यह मुगल दरबार में जाने वाला मेवाड़ का पहला शासक था

↓ पुत्र

जगतसिंह I → इसने सर्वप्रथम मुगल-मेवाड़ संधि तोड़ी थी।

↓

राजसिंह → उपनाम ⇒ विजयकटकातू

↓

जयसिंह

↓

अमरसिंह II → देबारी समझौता (1708)

↓

~~भीमसिंह~~

संग्रामसिंह II → निर्माण करवाया ⇒ सहेलियों की बाड़ी

जगतसिंह II ⇒ अध्यक्षता की ⇒ हुरडा सम्मेलन 1734

↓

भीमसिंह → सर्वप्रथम अंग्रेजों से संधि की थी।

↓

स्वरूपसिंह → 1857 क्रांति के समय शासक था।

↓

सज्जनसिंह → निर्माण करवाया | सज्जनगढ़ दुर्ग

↓

फतहसिंह

↓

भूपालसिंह → अन्तिम शासक था

गुहिल वंश

→ संस्थापक ⇒ गुहिलादित्य / गुहादित्य ⇒ स्थापना समय 566 ई. में
- → उपनाम ⇒ गुहिल वंश का आदिपुरुष
  - ⇒ गुहिल वंश का मूलपुरुष
- → नामकरण हुआ ⇒ इसका जन्म गुफा में हुआ इसलिए गुहादित्य/गुहिलादित्य कहलाया था।

बप्पा रावल

- → वास्तविक नाम ⇒ कालभोज / कालाभोज
- → गुरु ⇒ हारित ऋषि ⇒ शैव भक्त थे
  - → इसकी बप्पा रावल की गाय चराते थे।

→ नाम दिया ⇒ गुरु हरित ऋषि ने बप्पा रावल दिया

Im → रणकपुर प्रशस्ति में बप्पा रावल और कालभोज दोनों अलग - अलग थे।

→ गुरु हरित ऋषि के आशीर्वाद से चित्तौड़ जीता 734 ई. में मानमौर्य को हराकर

→ राजधानी बनाई ⇒ नागदा (उदयपुर)

→ निर्माण ⇒ एकलिंग जी मंदिर । मंदिर ⇒ कैलाशपुरी ⇒ उदयपुर
- → यह गुहिल वंश का कुलदेवता था
- → राजा स्वयं को एकलिंग जी का दीवान मानते थे।

→ बप्पा रावल का उपनाम ⇒ चक्कवै
⇒ कालभोज

→ बप्पा द्वारा प्रारम्भ की गई उपाधि ⇒ रावल

note1 एकलिंग जी को मेवाड़ का वास्तविक शासक मानते है। जबकि राजा स्वंय को इसका दीवान मानते है।

note2 रावल ⇒ बप्पा रावल द्वारा मेवाड़ शासकों में चलाई गई उपाधि जिसे राजा अपने नाम के साथ प्रयोग करते थे

note3 आसकां लेना ⇒ मेवाड़ का प्रत्येक राजा युद्ध में जाने से पहले एकलिंगजी के मंदिर में आशीर्वाद व अनुमति लेता था।

→ निर्माण ⇒ सहस्त्रबाहु मंदिर / सास बहु मंदिर । मंदिर ⇒ नागदा (उदयपुर)

अल्लट

- इसका दूसरा नाम ⇒ आलुराव
- दूसरी राजधानी ⇒ आहड़ (उदयपुर)
- Im चलाई गई ⇒ नौकरशाही प्रथा
- शादी की ⇒ हूणी राजकुमारी (हरियादेवी से की)
  - राजस्थान का पहला अन्तर्राष्ट्रीय विवाह था

note ⇒ भारत में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय विवाह किया ⇒ चन्द्रगुप्त मौर्य ने

रणसिंह

- 2 पुत्र ⇒
  - क्षेमसिंह ⇒ इसे मेवाड़ का शासक बनाया
  - राहप ⇒ यह गुस्सा होकर चला गया ⇒ सिसोदा गाँव उदयपुर

↓

प्रथम ⇒ राहप
↓ वंशज
भीमसिंह
↓ पुत्र
हम्मीरदेव

क्षेमसिंह

↓

रावल जैत्रसिंह (12-13)(53)

- जानकारी मिली ⇒ हम्मीर मद मर्दन का ग्रंथ → लेखक ⇒ जयसिंह सूरी
- समकालीन सुल्तान ⇒ इल्तुतमिश (1211-36)

↓ आक्रमण किया

1221 - भूताला का युद्ध

- जैत्रसिंह → जीत
- इल्तुतमिश → हार

note ⇒ भूताला युद्ध से लौटते हुए इल्तुतमिश नागदा में लूटपाट मचा देता है। तो नागदा तहस नहस कर देता है।

⇒ जैत्रसिंह ने नई राजधानी बनाई ⇒ चित्तौड़गढ़

⇒ note ⇒ मध्ययुगीन मेवाड़ के इतिहास में जैत्रसिंह का काल स्वर्णकाल / goldentime कहा गया।

तेजसिंह (1253-73)

- रानी ⇒ जयतल्ल देवी → निर्माण → श्याम पार्श्वनाथ मंदिर (चित्तौड़गढ़)
- इसके काल में लिखा गया मेवाड़ का पहला चित्रित ग्रंथ ⇒ श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि
  - note ⇒ मेवाड़ का पहला चित्रित ग्रंथ था।
  - लिखा गया ⇒ आहड़ (उदयपुर)
  - लेखक ⇒ कमलचन्द्र ने 1260 में लिखा गया।

समरसिंह (1273-1301)

- इसने जीव हिंसा पर रोक लगाई
- 2 पुत्र
  - रतनसिंह
  - कुंभकर्ण ⇒ यह नेपाल चला गया।

रावल रतनसिंह (1301-03)

- सेनापति ⇒
  - गौरा
  - बादल
- निर्माण करवाया
  - ⇒ बादल महल
  - ⇒ पद्मिनी महल
- गुरु ⇒ राघव चेतन

→ रानी पद्‌मिनी
- निवासी ⇒ सिंहलद्वीप (श्रीलंका)
- पिता ⇒ गन्धर्वसेन
- तोता था ⇒ हीरामन तोता / नागरीनी तोता
  - विशेषता ⇒ हुबहु मानव आवाज में बोलता है।

→ इसकी जानकारी के स्त्रोत ⇒
- पद्‌मावत ग्रंथ → लेखक ⇒ मलिक मौहम्मद जायसी
- गोरा - बादल री चौपाई → लेखक ⇒ हेमरत्न सूरी
- खजाइन उल फुतूह → लेखक ⇒ अमीर खुसरो
- पद्‌मिनी वर्णन → लेखक ⇒ हाजी उद्‌दबीर

1303 चितौडगढ का युद्ध

- रतनसिंह → हार
- अलाउद्दीन खिलजी → जीत

⇒ Ak ने 28 Jan 1303 को चितौडगढ पर आक्रमण किया or 26 Aug 1303 को A.K ने चितौड पर अधिकार किया।

⇒ A.k ने 8 माह के घेराव के बाद चितौड पर अधिकार किया।

⇒ रतनसिंह के नेतृत्व में राजपूत केसरिया पगड़ी पहनकर लड़ते हुएं मारे गए थे जिसे केसरिया करना कहते है।

⇒ युद्ध में हार के बाद पद्‌मिनी के नेतृत्व में 1600 महिलाओं ने अग्निकुण्ड में कूदकर जौहर किया था।

→ यहाँ राजस्थान का दूसरा शाका हुआ था [NOTE - केसरिया + जौहर ⇒ शाका]
→ रतनसिंह "रावल शाखा" का अन्तिम शासक था।
→ A·K ने चित्तौड़गढ़ दिया सौंपा पुत्र ⇒ खिज्र खाँ को

NOTE ⇒ A·K ने पुत्र खिज्र खां के नाम पर चित्तौड़ का नाम रखा ⇒ खिज्राबाद

→ खिज्र खां ने 1313 में चित्तौड़गढ़ जालौर के मुछाला मालदेव / मालदेव सोनगरा को सौंप दिया।

→ 1326 में मुच्छाला मालदेव ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग को अपने पुत्र जयसिंह / जैसा / बनवीर को सौंपा था।

→ कर्नल जेम्स टॉड ने चित्तौड़गढ़ को नाम दिया ⇒ जौहर नगरी

→ इस पुरी (घटना) को सूर्यमल्ल मिश्रण ने काल्पनिक बताया था झूठी बताया जबकि दशरथ शर्मा ने सच्ची घटना बताया था।

हम्मीरदेव सिसोदिया (1326-64)

→ कौन था ⇒ सिसोदा गाँव (उदयपुर) के अरिसिंह का पुत्र था

→ 1326 में इसने जैसा / जयसिंह / बनवीर को पराजित किया। अधिकार किया ⇒ चित्तौड़गढ़

→ उपनाम
- → विषमघाटी पंचानन ——→ अर्थ ⇒ विषम परिस्थितियों से लड़ने वाला
- → प्रबल हिन्दू शासक
- → वीर राजा

→ प्रारम्भ किया ⇒
- → गुहिल वंश के स्थान पर नया वंश सिसोदिया चलाया।
- → रावल शाखा के स्थान पर नया चलाया ⇒ राणा / महाराणा शाखा

→ इसे मेवाड़ का उद्धारक I कहा गया।

NOTE ⇒ मेवाड़ का दूसरा उद्धारक भामाशाह को कहते है।

खेता / क्षेत्रसिंह (1364-82)

- दासी पुत्र ⇒ चाचा, मेरा, महपा पँवार
- रानी पुत्र ⇒ लक्षसिंह / लाखा

राणा लाखा / लक्षसिंह (1382-1421)

- इसके काल में एशीया की सबसे बड़ी चांदी खान निकाली ⇒ जावर खान (उदयपुर)
- इसके काल में निर्मित हुई ⇒ पिछोला झील (उदयपुर)
  - निर्माण ⇒ पिच्छू, छीतरमल > बंजारों द्वारा बैल की स्मृति में
- पुत्र ⇒ कुंवर चूडा
- कुंवर चूड़ा के प्रयास से शादी हुई। ⇒ राणा लाखा or हंसाबाई (जोधपुर की राजकुमारी)
  - पुत्र ⇒ मोकल

note ⇒ कुंवर चूड़ा को कहा गया ⇒ राज० का भिष्मपितामह

मोकल (1421-33)

- विरोधी थे ⇒ चाचा + मेरा + महपा पंवार
- यह अल्पायु में शासक बना था।
- प्रारम्भ संरक्षक बनाया ⇒ कुंवर चूडा
  - इसपर हंसाबाई को संदेह था।
  - यह माण्डू (गुजरात) चला गया।
- नया संरक्षक बनाया रणमल को

- निर्माण करवाया था ⇒ सामिद्धेश्वर मंदिर (चित्तौड़) ⇒ दुसरा नाम ⇒ मोकुल का मंदिर
- निर्माण करवाया ⇒ एकलिंगजी मंदिर का परकोटा / चारदीवारी बनवाई
  इसको पूर्ण करवाया ⇒ राणा कुम्भा
- राणा कुम्भा
- मोकुल की हत्या की ⇒ 1433 में जीलवाडा (राजसमंद) में चाचा + मेरा + महपा पवांर ने की थी।

राणा कुम्भा (1433-68)

- शासक बना ⇒ अल्पायु में
- संरक्षक बना ⇒ रणमल राठौर
- शौकीन था ⇒ वीणा वादक
- उपनाम ⇒ अभिनव भरताचार्य
  - ⇒ हिन्दु सुरत्राण
  - ⇒ राजगुरु
  - ⇒ छापगुरु
  - ⇒ दानगुरु
  - ⇒ राणोरासो

- इसने चूडा को वापस बुलाया था।
- **दरबारी विद्वान**
  - ⇒ कान्हा व्यास ⟶ ग्रंथ लिखा ⟶ एकलिंग महात्म्य
  - ⇒ मण्डन ⟶ ग्रंथ लिखा ⟶ रूपमण्डन + वास्तुमंडन + कोदण्डमण्डन + रूपरसावतार
  - ⇒ गोविन्द ⟶ ग्रंथ लिखा ⟶ कलानिधि

→ स्वयं कुम्भा ने पुस्तक लिखी ⇒ "संगीतराज
⇒ संगीतमीमांसा
⇒ संगीत सुधा
⇒ सूड प्रबंध | सुधा प्रबंध
⇒ कामराज रतिसार

⇒ जानकारी मिली ⇒ श्यामलदास की पुस्तक वीरविनोद

↓

इस पुस्तक के अनुसार राज॰ में कुल 84 दुर्ग है। इनमें से 32 दुर्ग अकेले कुम्भा ने बनवाये थे।

↓

कुम्भा का काल राज॰ में स्थापत्यकला का स्वर्णकाल कहलाया था।

⇒ कुम्भा ने राज॰ में निर्माण करवाया था

- → भोमट का किला (डुंगरपुर)
- → अचलगढ़ का किला (सिरोही)
- → कुंभलगढ़ का किला (राजसमंद)
  - → निर्माण का समय ⇒ 1458
  - → नामकरण हुआ ⇒ रानी कुंभलवती के नाम पर रखा गया।
  - → शैल्पी ⇒ मंडन
  - → इसमें कुम्भा ने अपना निवास बनाया था ⇒ कटारगढ़ महल
    - → उपनाम ⇒ मेवाड़ की आँख

⇒ शासक बनते ही आदेश दिया ⇒ चाचा + मेरा + महपा पंवार

- → इन पिता के हत्यारों को कैद करने का।
- → तीनों भागकर मालवा शासक महमूद खिलजी के पास छिप जाते है।

↓

1437 सारंगपुर का युद्ध (M.P)

- **कुम्भा** → जीत
- **महमूद खिलजी** → हार

⇒ युद्ध में विजय के उपलक्ष्य में निर्माण करवाया ⇒ **विजयस्तंभ / किर्तिस्तम्भ** → चित्तौड़

⇒ निर्माणकर्ता ⇒ कुंभा

⇒ वास्तुकार ⇒ जैता + पोमा + पूंजा

⇒ मंजिल ⇒ 9 मंजिला

⇒ कहा गया ⇒ कर्नल जेम्स टॉड ने कहा ⇒ कुतुबमीनार के समान

⇒ गर्टज ने कहा ⇒ भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष / अजायबघर

⇒ इसको प्रतीक माना राज० पुलिस का।

⇒ 3 मंजिल पर 9 बार बिस्मिल्ला लिखा है। इस पर 15 Aug 1949 को डाक टिकट चलाया गया जो राज० में सर्वप्रथम किसी इमारत पर चलाई गई

⇒ इसका पुनः निर्माण या मरम्मतकर्ता ⇒ स्वरूप सिंह था।

⇒ निर्माण काल ⇒ 1440–1448

⇒ संधि करवाई ⇒ **1453 – आंवल-बांवल की संधि** ⇒ हंसाबाई ने करवाई

मध्य

- **मेवाड़** → कुंभा → पुत्र → **रायमल**
- **मारवाड़** → राव जोधा → पुत्री → **श्रृंगारदेवी**

रायमल — शादी करदी — श्रृंगारदेवी

⇒ संधि के तहत मेवाड़-मारवाड़ की सीमा निर्धारित की।

⇒ 1456 - चंपानेर की संधि हुई

↓ मध्य हुई

- मालवा → राजा → महमुद खिलजी
- गुजरात → राजा → कुतुबुद्दीनशाह

↳ उद्देश्य था ⇒ दोनों को मिलाकर कुंभा को हराना।

↓

1457 बदनौर का युद्ध (भीलवाड़ा)

- कुम्भा ↳ जीत
- महमुद खिलजी + कुतुबुद्दीन शाह ↳ हार

note ⇒ इस जीत की खुशी में कुम्भा ने बदनौर में कुशालमाता का मंदिर बनवाया।

⇒ 2 पुत्र
- ऊदा → इसने कुम्भा की कुंभलगढ़ महल में हत्या कर दी।
- रायमल

note ⇒ ऊदा को मेवाड़ का प्रथम पितृहन्ता कहते हैं।

↓

उत्तराधिकारी युद्ध हुआ

- ऊदा ↳ हार
- रायमल ↳ जीत

⇒ उदा की मृत्यु 1473 में बिजली पड़ने से मृत्यु हो गई।

⇒ **राणा रायमल (1473-1509)**

- → निर्माण करवाया ⇒ राम + श्याम + संकर तालाबों के
- → पुत्र
  - → **पृथ्वीराज**
    - ⇒ उपनाम ⇒ उड़ना राजकुमार
    - ⇒ रानी
      - ⇒ तारा ⇒ इसके लिए पृथ्वीराज ने अजमेर किले के आन्तरिक भाग का निर्माण करवाया।
      - ⇒ इसी के नाम पर अजमेर दुर्ग का नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया।
    - → पृथ्वीराज की छतरी ⇒ कुंभलगढ़ (राजसमंद)
  - → जयमल
  - → सांगा / संग्रामसिंह

note ⇒ भीमली चारणी और मारू ब्राह्मण ने भविष्यवाणी की रायमल के तीनों पुत्रों में से सबसे छोटा पुत्र सांगा मेवाड़ का राजा बनेगा।

note ⇒ सांगा अपने भाईयों से जान बचाकर अजमेर में कर्मचन्द्र पंवार के यहाँ शरण लेता है।

राणा सांगा (1509-28)

- → इसके लिए कथन ⇒ हरविलास शारदा ने कहा "राज० का सर्वश्रेष्ठ शासक राणा सांगा था
- → K.M मुंशी ने कहा ⇒ जैसे-तैसे सांगा राजा तो बन गया लेकिन उसके राज्य के चारों तरफ शक्तिशाली राजाओं का अधिकार था।
- → समकालीन शासक थे।

- गुजरात → बहादुरशाह
- मालवा → महमुद खिलजी
- दिल्ली → इब्राहिम लोदी

⇒ **1517 – खातोली का युद्ध**

- इब्राहिम लोदी → हार
- सांगा
  - → जीत
  - → इस युद्ध में सांगा का एक हाथ और पैर कट गया।
- सांगा —पुत्र→ **भोजराज** —शादी→ **मीराबाई**
  - भोजराज → मृत्यु हो गई
  - मीराबाई
    - → उपनाम ⇒ राज० की राधा
    - → वागड़ की मीरा गवरी बाई

1518 – बाड़ी का युद्ध (धौलपुर)

- इब्राहिम लोदी → हार
- सांगा → जीत

1519 गागरोन का युद्ध झालावाड़

- महमुद खिलजी
  - हार
  - इसे सांगा ने 6 माह कैद में रखकर रिहा कर दिया।
- राणा सांगा → हार

1526 पानीपत का युद्ध → इस युद्ध में बाबर ने **तुलगुमा पद्धति** का प्रयोग किया।
- ↳ अर्थ ⇒ तोप + गोली + बंदूक का प्रयोग किया गया।

- बाबर ↳ जीत
- इब्राहिम लोदी ↳ हार

16 फरवरी 1527 - बयाना का युद्ध

- बाबर
- सांगा

17 मार्च 1527 - खानवा युद्ध

- राणा सांगा ↳ हार
- बाबर ↳ जीत ⇒ इसने घोषणा की
  - ⇒ शराब का सेवन नही करूगा।
  - ⇒ तमगा कर / चुंगी कर माफ कर दुगा।
  - ⇒ जेहाद / धर्मयुद्ध कहा।

↳ युद्ध से पहले प्रथा चलाई ⇒ **पाती पेरबन की प्रथा**
- ↳ अर्थ ⇒ पत्र लिखकर राजपुत राजाओ को युद्ध के लिए आमंत्रित किया।
- ↳ पाती पेरबन प्रथा के तहत भाग लेने वाले शासक
  - ⇒ जयपुर ⇒ पृथ्वीराज कच्छवाह
  - ⇒ जोधपुर ⇒ राव मालदेव
  - ⇒ बीकानेर ⇒ कल्याणमल
  - ⇒ मेवात ⇒ हसन खाँ मेवाती
  - ⇒ काठियावाड़ ⇒ (U.P) ⇒ सलहदी तँवर
    - ↳ इस सांगा का विश्वासघाती था।

⇒ जो बीच युद्ध में बाबर से मिल गया था।

⇒ मेवात ⇒ हसनखा मेवाती ⇒ खानवा युद्ध में सांगा की तरफ से भाग लेने वाला एकमात्र मुस्लिम था।

⇒ काठियावाड़ ⇒ झाला अज्जा ⇒ इसने सांगा का छत्र धारण किया था

note ⇒ इस युद्ध में बाबर ने 1 लाख राजपूतो के सर कटवाए और गाजी की उपाधि धारण की।

note ⇒ सांगा को घायल अवस्था में बसवा (दौसा) ले जाया गया और एरिचपुर (M.P) में सरदारो द्वारा सांगा को जहर दे दिया गया।

note ⇒ सांगा की 1528 में कालपी (U.P) में मृत्यु हो गई।

⇒ सांगा को सैनिको का भग्नावेश कहते है। और हिन्दुपति कहा गया था।

विक्रमादित्य (1531-36)

- → संरक्षिका मां ⇒ कर्मावती / कर्णावती
- → छोटा भाई ⇒ उदयसिंह
- → सेनापति बनाया ⇒ देवलिया प्रतापगढ़ का बाघसिंह
- → समकालीन संघर्ष ⇒ गुजरात का बहादुरशाह का आक्रमण

1533 - चित्तौड़गढ़ का युद्ध

- विक्रमादित्य → हार
- बहादुरशाह → जीत

note ⇒ इस युद्ध में विक्रमादित्य दुर्ग की जिम्मेदारी सेनापति बाघसिंह को सौंप कर

विक्रमादित्य (1531-36)

- इसकी हत्या कर दी ⇒ **बनवीर द्वारा**
  - कौन था ⇒ कुंवर पृथ्वीराज / उड़ना राजकुमार का दासी पुत्र था।
  - निर्माण करवाया ⇒ **तुलजा भवनी मंदिर**
    - ⇒ स्थान ⇒ चित्तौड़गढ़
    - ⇒ उपनाम ⇒ शिवाजी की कुलदेवी
- बनवीर उदयसिंह को मारने गया था। लेकिन धाय माँ ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उदयसिंह को बचाया।
- उदयसिंह को शरण दी ⇒ **कुंभलगढ़ (राजसमंद में)**
  - संरक्षक बनाया ⇒ ~~आ~~ आशादेवपुरा को

उदयसिंह (1537-72)

- राजा बना ⇒ युद्ध किया ⇒ **1540 मावली का युद्ध** (उदयपुर)
  - उदयसिंह
    - जीत
    - इसका साथ दिया ⇒ मारवाड़ शासक राव मालदेव ने
  - बनवीर
    - हार
- नगर बसाया ⇒ 1559 में उदयपुर
- रानी ⇒ **जयवन्ता बाई** —पुत्र→ **महाराणा प्रताप**
  - ⇒ **धीरबाई** —पुत्र→ **जगमाल**
  - ⇒ सेनापति
    - ⇒ जयमल
    - ⇒ पत्ता
  - समकालीन दिल्ली शासक था
    - ⇒ शेरशाह सूरी
    - ⇒ अकबर

→ उदयसिंह ने शेरशाह सूरी को चित्तौड़गढ़ दुर्ग की चाबी भेजकर अधीनता स्वीकार की।

note ⇒ अकबर द्वारा मेवाड़ पर आक्रमण किया और जयमल भागकर उदयसिंह के यहां शरण ले लेता है।

note ⇒ अकबर ने अपना विद्रोही जयमल उदयसिंह से मांगा लेकिन उदयसिंह ने सौंप ने से मना कर दिया। जिसके कारण ~~उदयसिंह~~ अकबर ने चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण कर दिया।

→ युद्ध हुआ ⇒ 1567-68 **चित्तौड़गढ़ का युद्ध**

- अकबर
  - जीत
  - बैठकर आया ⇒ हवाई हाथी
  - इसके पास बंदूक ⇒ संग्राम बंदूक
- उदयसिंह
  - हार

⇒ उदयसिंह युद्ध से पहले गिरवा की पहाड़ि (उदयसिंह) चला गया।

⇒ युद्ध ~~से~~ ~~पहले~~ में भाग लिया ⇒ जयमल + पत्ता + कल्ला राठौर

⇒ इसमें अकबर ने कत्लेआम करवाया जो अकबर के जीवन पर अमिट कलंक माना गया था।

⇒ इस युद्ध में कल्ला राठौर जयमल के कंधों पर बैठकर लड़ा और मारा गया। जिसे 4 हाथो वाला देवता कहते है।

⇒ जयमल पत्ता के नेतृत्व में राजपूत सैनिकों ने केसरिया किया। और रानी फुलकंवर के नेतृत्व में जौहर किया।

note यह मेवाड़ का तीसरा साका था।

note ⇒ अकबर ने जयमल, पत्ता की मूर्तियां आगरा में बनाई जिन्हें औरंगजेब द्वारा तोड़ दिया।

note ⇒ वर्तमान में जयमल पत्ता की गजारूढ़ मूर्तियाँ बीकानेर के जूनागढ़ दुर्ग में स्थित है। जो रायसिंह ने बनवाई थी।

note ⇒ कर्नल जेम्स टॉड ने कहा सांगा और प्रताप के मध्य उदयसिंह न होता तो मेवाड़ का इतिहास उज्जवल होता

note ⇒ श्यामलदास ने कहा उदयसिंह का युद्ध स्थल छोड़कर जाना उसकी कायरता थी।

- निर्माण करवाया ⇒ बाणमाता का मंदिर (उदयसिंह)
  - यह सिसोदिया वंश की आराध्यदेवी थी।
- उदयसिंह की संतान
  - महाराणा प्रताप
  - शक्तिसिंह
  - जगमाल → उदयसिंह ने इसे रानी धीरबाई के कहने पर मेवाड़ का शासक बनाया था।
    - मेवाड़ी जनता or अखैराज सोनगरा की मदद से प्रताप को शासक बनाया गया था
    - यह गुस्सा होकर चला गया ⇒ अकबर के पास

महाराणा प्रताप (1572-97) 25 वर्ष तक राजा रहे थे।

- जन्म ⇒ कुंभलगढ़ दुर्ग के कटारगढ़ महल के बादल महल में
- जन्म का समय ⇒ 9 मई 1540 / ज्येष्ठ शुक्ल III
- माँ ⇒ जयवन्ताबाई
- 2 भाई ⇒ शक्तिसिंह, जगमाल } इन्होंने शरण ली ⇒ अकबर के पास
- रानी ⇒ अजबदे पवांर
- पुत्र ⇒ अमरसिंह I

- हाथी
  - लूणा
  - रामप्रसाद → अकबर ने नया नाम रखा ⇒ पीर प्रसाद
- घोड़ा ⇒ चेतक → छतरी ⇒ बलीचा गाँव (राजसमंद)
- दरबारी विद्वान ⇒ चक्रपाणि मिश्र —ग्रंथ→ विश्ववल्लभ
- इसके तलवार बांधने वाला ब्राह्मण था ⇒ कृष्णदास ब्राह्मण था
- शस्त्रागार ⇒ मायरा गुफा (उदयसिंह)
- उपनाम
  - ⇒ मेवाड़ केसरी
  - ⇒ हल्दीघाटी का शेर
  - ⇒ महानतम सुरताण
  - ⇒ पाथल ⇒ यह साहित्यिक नाम है। जो कन्हैयालाल सेठिया की किताब पाथल-पीथल में कहा गया।
  - ⇒ कीका
    - अर्थ ⇒ पहाड़ी पुत्र

note ⇒ पाथल महाराणा प्रताप or पीथल बीकानेर के पृथ्वीराज राठौर को।

- मृत्यु ⇒ 19 Jan 1597 में चावण्ड (उदयपुर)
- छतरी ⇒ बाण्डोली (उदयपुर)
- प्रताप का स्मारक ⇒ मोती-मगरी (उदयपुर) में फतहसागर झील पर
- समकालीन बादशाह ⇒ अकबर (1556-1605)
- अकबर ने प्रताप को समझाने 4 शिष्टमण्डल भेजे।
  - J ⇒ जलालखां → 1572
  - M → मानसिंह
  - P ⇒ भगवन्तदास
  - T ⇒ टोडरमल

  (मानसिंह, भगवन्तदास, टोडरमल) → 1573

note ⇒ रणछोड़ भट्ट की पुस्तक - अमरकाव्यवंशावली के अनुसार मानसिंह की मुलाकात उदयसागर झील पर अमरसिंह से हुई थी। इसमें अमरसिंह ने मानसिंह का अपमान कर दिया तो मानसिंह ने युद्ध की चेतावनी दे डाली।

18 जून 1576 हल्दीघाटी का युद्ध

- महाराणा प्रताप
  - घोड़ा ⇒ चेतक
  - ~~जीत~~ हार
- मानसिंह
  - हाथी ⇒ मर्दाना
  - ~~हार~~ जीत

⇒ झाला बीदा / मन्ना ⇒ मिहतर खाँ ⇒ आसफ खाँ / हाकिम खा सूर + भीलपूजा

⇒ इस युद्ध में अकबर ने मानसिंह को आदेश दिया महाराणा प्रताप को कैद करने का

⇒ इस युद्ध में प्रताप का छत्र धारण किया ⇒ झाला बिदा / झाला मन्ना ने

⇒ इस युद्ध में प्रताप का एकमात्र मुस्लिम सेनापति ⇒ हाकिम खाँ सूर था। और भील सेनापति ⇒ पूंजा था

⇒ इस युद्ध में मिहतर खा ने अकबर के आने की झूठी अफवाह फैलाई

⇒ इस युद्ध मे भागती हुई मुगल सेना में आसफ खाँ ने जिहाद का नारा दिया था

note ⇒ मानसिंह इस युद्ध से प्रताप का हाथी अकबर ले गया और अकबर ने इसका नाम पीरप्रसाद रखा।

note ⇒ घायल घोडा चेतक प्रताप को बलीचा गाँव तक ले जाता है। (राजसमंद)

जहा चेतक अंतिम सास लेता है।

⇒ बलीचा में प्रताप की मुलाकात अपने भाई शक्तिसिंह से हुई जो अपना घोड़ा प्रताप को देता है। जिससे प्रताप कोलयारी गाँव (उदयपुर) में शरण लेता है। और ईलाज करवाता है।

अलबदायूनू

- कौन था ⇒ अकबर का दरबारी विद्वान था।
- यह हल्दीघाटी में उपस्थित एकमात्र विद्वान था।
- इसने हल्दीघाटी युद्ध में राजपूतों के खून से अपनी दाढी रंगी थी।
- पुस्तक लिखी ⇒ मुन्तखब उल तवारीख

हल्दीघाटी युद्ध को दिए गए नाम

- कर्नल जेम्स टाँड ने कहा ⇒ मेवाड़ की थर्मोपल्ली / थर्मोपोली
- अलबदायून ने कहा ⇒ गोगुन्दा का युद्ध
- अबुल फजल ने कहा ⇒ खमनौर का युद्ध

<u>note</u> ⇒ युद्ध के दौरान प्रताप को मानसिंह द्वारा कैद ना किए जाने पर अकबर ने मानसिंह को महल से निकाल दिया।

⇒ अकबर द्वारा मेवाड़ अभियान पर क्रमश: भेजे सेनापति ⇒

मानसिंह → अकबर → शाहबाज खाँ → अब्दुलरहीम खाँ-ए-खाना → सुल्तान खाँ → जगन्नाथ कच्छवाह

अकबर → यह 1576 में मेवाड़ अभियान पर आया।
⇒ इन्होंने उदयपुर जीता और उदयपुर का नाम रखा ⇒ मोहम्मदाबाद
⇒ यह प्रताप को बंदी बनाने में असफल हुऐ।

⇒ अकबर ने सर्वाधिक **3 बार मेवाड़** अभियान पर भेजा ⇒ शाहबाज खाँ को

- (I) 1577
- (II) 1578
- (III) 1579

3 April 1578 कुम्भलगढ़ का युद्ध

- शाहबाज खाँ → जीत
- भाण सोनगरा → हार
  - कौन था → महाराणा प्रताप का मामा
- राज॰ में इतिहास में कुम्भलगढ़ को केवल एक बार ही जीता गया था।

⇒ प्रताप की आर्थिक सहायता की ⇒ **भामाशाह ने** 1580 में

⇒ महाराणा प्रताप ने महासानी रामा के स्थान पर भामाशाह को अपना सलाहकार नियुक्त किया।

- ⇒ इन दोनों की मुलाकात हुई ⇒ पाली
- ⇒ मूल निवासी ⇒ पाली
- ⇒ उपनाम ⇒
  - ⇒ मेवाड़ का दूसरा उद्धारक
  - ⇒ मेवाड़ का दानवीर कर्ण

⇒ अकबर द्वारा प्रताप के विरुध भेजा गया अंतिम सेनापति ⇒ 1584 में जगन्नाथ कछवाहा
↳ लेकिन यह इस अभियान पर मारा गया

⇒ प्रताप ने 1585 मे राजधानी बनाई ⇒ चावण्ड (उदयपुर)
- → मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी
- → राजधानी 1585-1615 तक
  - → 30 वर्ष तक राजधानी रही।

⇒ 1586-96 तक अकबर ने प्रताप के विरुध कोई भी अभियान नही किया।

note ⇒ मुगल-मेवाड़ के मध्य 10 वर्षीय अघोषित संधि कहा गया था।

note ⇒ 19 जनवरी 1597 को महाराणा प्रताप के धनुष की प्रतिंचा चढ़ाते हुऐ मृत्यु हो गई।

अमरसिंह I (1597-1620)
- → पुत्र ⇒ कर्णसिंह
- → समकालीन बादशाह
  - → अकबर (1556-1605) ⇒ इसकी मृत्यु 1605 मे हो गई थी।
  - → जहांगीर (1605-28)
    - ↳ पुत्र ⇒ खुर्रम (शाहजहां)
- → सर्वप्रथम संधि हुई ⇒ 5 फरवरी 1615 मुगल-मेवाड़ संधि की ⇒ मेवाड़ का पहला शासक जिसने मुगलो की अधीनता स्वीकार की ⇒ अमरसिंह I

मध्य हुई
- अमरसिंह I
  - शुभकर्ण
  - हरिदासझाला
- जहांगीर
  - श्रीराजी
  - सुन्दरदास जी

note ⇒ इस संधि के दौरान अमरसिंह के तरफ से भाग लिया ⇒ शुभकरण, हरदासझाला ने जबकि जहांगीर के तरफ से भाग लिया ⇒ श्रीराजी और सुन्दरदास जी ने।

note ⇒ संधि के बाद अमरसिंह ने अपना राजपाट अपने पुत्र कर्णसिंह को सौंपा और आहड़ की पहाड़ियों में चले गए जहां इनकी 1620 में मृत्यु हो गई।

note ⇒ अमरसिंह की छतरी आहड़ (उदयपुर) में स्थित है।

कर्णसिंह (1620–28)

- → निर्माण ⇒ प्रारम्भ करवाया ⇒
  - → जगमंदिर
  - → जगनिवास
  - > महलों का पिछोला झील (उदयपुर)
  - **note** ⇒ इन महलों का निर्माण पूर्ण करवाया ⇒ जगतसिंह II ने
- → मेवाड़ का पहला शासक जो मुगल दरबार में उपस्थित हो।
- → मनसबदारी ⇒ 5000 की पद सम्मान प्राप्त करने वाला मेवाड़ का पहला शासक था
- → पुत्र ⇒ जगतसिंह I

जगतसिंह (1628–52)

- → धाय माँ ⇒ नौजूबाई ⇒ धाय माँ का मंदिर ⇒ उदयपुर
- → घटना ⇒ इसने मुगल मेवाड़ संधि तोड़ी
  - → इसके लिए जगतसिंह ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग की मरम्मत करवाकर
- → पुत्र ⇒ राजसिंह

राजसिंह (1652–80)

- → उपनाम ⇒ विजयकटकातु (वाकपटुता के कारण)
  - ⇒ झीलों का निर्माता शासक
  - ⇒ हाइड्रोलिक शासक

⇒ निर्माण ⇒ राजसमंद झील (राजसमंद) ⇒ इसे गोमती नदी का जल रोककर बनाया गया
- → राज॰ का एकमात्र जिला जिसका नाम झील के नाम पर पड़ा था ⇒ राजसमंद

⇒ रानी ⇒ रामरस दे ⇒ निर्माण करवाया ⇒ त्रिमुखी बावड़ी (डूंगरपुर)

⇒ समकालीन बादशाह ⇒ औरंगजेब (1658-1707)
- → इसने भारत मे जजिया कर लगाया जिसका राजसिंह ने विरोध किया।
  - → गैर मुस्लिम जाति पर लगाया जाने वाला राजनैतिक कर
- → इसने हिन्दु मंदिर तोड़ने की घोषणा की तो विरोध मे राजसिंह ने मंदिर बनवाए
  - m. ⇒ श्रीनाथ जी मंदिर ⇒ नाथद्वारा
  - ⇒ द्वारकाधीश मंदिर ⇒ कांकरोली (राजसमंद)
  - ⇒ अम्बे माता का मंदिर ⇒ उदयपुर

चारुमति विवाद ⇒ किशनगढ़ के शासक रूपसिंह की चारुमति से विवाह करना चाहता था औरंगजेब जिससे धर्म की रक्षार्थ राजसिंह ने शादी की थी।

⇒ औरंगजेब ने मेवाड़ अभियान पर मुगल सेना भेजी थी।

⇒ मुगल सेना के विरुद्ध युद्ध लड़ने के लिए राजसिंह ने आदेश दिया
⇒ सलुम्बर के रतनसिंह चूण्डावत
- ⇒ रानी ⇒ सहलकंवर / सलहकंवर
  - → इसने रतनसिंह को निशानी के रूप में अपना सिर काटकर दिया था।
  - → उपनाम ⇒ हाड़ी रानी

कहावत ⇒ चूण्डावत मांगे निशानी
सिर काटकर दिया क्षत्राणी

जयसिंह (1680-98)

- पुन अधीनता स्वीकार की ⇒ औरंगजेब की।
- m. निर्माण करवाया ⇒ जयसमंद झील (सलूम्बर) ⇒ गोमती नदी का जल रोक कर।
  - यह राज० की सबसे बड़ी मीठे पानी की कृत्रिम झील थी।

अमरसिंह II (1698-1710)

- पुत्री ⇒ चन्द्रकंवरी

देबारी समझौता 1708

मध्य हुआ

- मेवाड़ → अमरसिंह II → पुत्री → चन्द्रकंवरी
- आमेर → सवाई जयसिंह → (शादी की) चन्द्रकंवरी, सूरजकुंवरी
- जोधपुर → अजीतसिंह → पुत्री → सूरजकुंवरी

note ⇒ इस समझौते के बाद अमरसिंह ने सवाई जयसिंह को आमेर और अजीतसिंह को जोधपुर का राजा बनाया।

संग्रामसिंह (1710-34)

- पुत्र ⇒ जगतसिंह II
- m निर्माण करवाया ⇒ वैद्यनाथ मंदिर (स्थान) ⇒ सीसरमा गाँव (उदयपुर)
  - इसकी दीवारों पर लिखवायी ⇒ वैद्यनाथ प्रशस्ति ⇒ लेखक → रूपभट्ट
  - m सहेलियों की बाड़ी (उदयपुर)

जगतसिंह II (1734-78)

- दरबारी विद्वान ⇒ नेकराम —पुस्तक→ जगतविलास
- निर्माण पूर्ण करवाया ⇒ जगमंदिर, ⇒ जगनिवास } यह पिछोला झील (उदयपुर) में स्थित है।
- इसके काल में आयोजन हुआ ⇒ हुरडा सम्मेलन 17 July 1734 भीलवाड़ा
  - उद्देश्य ⇒ मराठों के खिलाफ राज० के शासको का संगठन था।
  - अध्यक्ष ⇒ जगतसिंह II
  - असफल हुआ

(भीमसिंह (1778-1828)

- पुत्री ⇒ कृष्णाकुमारी ⇒ इसकी शादी को लेकर युद्ध हुआ दो राजाओं में युद्ध हुआ 2 राजाओं में
  ⇓
  1807 - गिंगोली का युद्ध
  - जोधपुर का मानसिंह → हार
  - जयपुर का जगतसिंह → जीत
  - इस युद्ध के कारण कृष्णा के पिता भीमसिंह ने जहर देकर मार दिया।
- यह अंग्रेजों (EIC) से सर्वप्रथम संधि की थी। (1818)

स्वरूपसिंह (1842-61)

- 1857 की क्रांति के समय यह मेवाड़ का राजा था।
- पासबान/दासी ⇒ ऐंजाबाई यह स्वरूपसिंह की मृत्यु पर सती हुई थी

सज्जनसिंह (1872-84)

- निर्माण करवाया ⇒ सज्जनगढ़ दुर्ग (उदयपुर) ⇒ उपनाम
  - ⇒ मेवाड़ का मुकुटमणि
  - ⇒ मानसून पैलेस
  - ⇒ वाणी विलास महल
- इसने स्थापना की ⇒ महेन्द्रराज सभा 1880
  - क्या थी ⇒ न्यायिक संस्था थी।